नमक–राई, नारियल, फिटकरी आदि से कुदृष्टि कैसे उतारें ?

(कुदृष्टसम्बन्धी अध्यात्मशास्त्रीय विवेचनसहित)

卐 卐

'कुदृष्टि'सम्बन्धी संयुक्त भूमिका

बालकको काजलका टीका लगानेका संस्कार आज भी किया जाता है । आज भी कुछ वृद्ध अनुभवी स्त्रियां घर आए सम्बन्धियोंकी लिम्बलोण (नींबू और नमक) से कुदृष्टि उतारती हैं । जब सदियोंसे चली आ रही परम्पराओंका पालन किया जाता है, तब निश्चित ही उसके पीछे कुछ अध्यात्मशास्त्र होगा, यह हमें समझ लेना चाहिए ।

वर्तमानके स्पर्धात्मक और भोगवादी युगमें अधिकांश व्यक्ति ईर्ष्या, द्वेषभाव, लोकेषणा, परलिंगकी ओर अनिष्ट दृष्टिसे देखने आदि विकृतियोंसे ग्रस्त होते हैं । इन विकृतिजन्य रज–तमात्मक स्पन्दनोंका कष्टदायक परिणाम सूक्ष्मसे अनजानेमें दूसरे व्यक्तियोंपर होता है । इसे ही उस व्यक्तिको 'कुदृष्टि लगना' कहते हैं । इसी प्रकार परिवारमें झगडा होना, व्याधि, आर्थिक अडचन, बुरे स्वप्न दिखाई देना, निराशा, धूम्रपान (सिगरेट)की लत, मद्यका व्यसन जैसी समस्याएं अब नित्यकी हो गई हैं । वर्तमानमें जीवनकी ८० प्रतिशत समस्याओंका कारण स्थूल रूपसे दिखाई देता हो, तो भी वास्तविक कारण सूक्ष्म, अर्थात अनिष्ट शक्तियोंकी पीडा ही है । अनिष्ट शक्तियोंका कष्ट, कुदृष्टि लगनेका ही एक प्रकार है ।

संक्षेपमें, जीवन समस्यारहित और आनन्दमय बनाना हो, तो 'कुदृष्टि उतारना', इस सरल घरेलू आध्यात्मिक उपायका आलम्बन अपनाना सदा उपयुक्त होता है । आजके वैज्ञानिक युगमें विचरण करते समय 'कुदृष्टि लगना और कुदृष्टि उतारना', इस शब्दका उच्चारण भी करनेसे बुद्धिजीवी

卐 卐

उसे 'प्राचीन परम्परा' कहकर हीन समझते हुए नाक-भौंह सिकोडेंगे । वैज्ञानिक युगमें प्रत्येक बात शास्त्रीय पद्धतिसे प्रस्तुत करनेपर उसपर शीघ्र ही विश्वास होता है । इसलिए दृष्टसम्बन्धी २ खण्डोंमें कुदृष्टि लगनेकी, उसका परिणाम, विविध घटकोंसे कुदृष्टि उतारनेकी पद्धति, बालककी कुदृष्टि उतारनेकी सरल पद्धतियां, कुदृष्टि उतारते समय ध्यान देनयोग्य बातें इत्यादि स्पष्ट करते समय स्थूल माध्यमोंसे न समझमें आनेवाली बातें 'सूक्ष्म परीक्षणों' और 'सूक्ष्म ज्ञानसम्बन्धी चित्रों'के द्वारा स्पष्ट की गई हैं ।

सनातनके साधक समष्टि साधना कर 'ईश्वरीय राज्य' स्थापित करनेके लिए तो अनिष्ट शक्तियां 'आसुरी राज्य' स्थापित करनेके लिए प्रयत्नरत हैं। इस कारण अनिष्ट शक्तियां साधकोंको विविध प्रकारसे बडी मात्रामें कष्ट देती हैं । साधकोंको हो रही अनिष्ट शक्तियोंकी पीडापर उपायस्वरूप वर्ष २००१ से सनातनके साधकोंकी कुदृष्टि उतारना प्रारम्भ किया है । कुदृष्टि उतारनेसे पूर्व साधकोंकी स्थिति, कुदृष्टि उतारनेसे उनपर हुआ परिणाम एवं हुआ लाभ, यह साधकोंकी अनुभूतियोंद्वारा प्रस्तुत किए जानेसे कुदृष्टि उतारनेकी पद्धति शास्त्रसम्मत है, यह प्रमाणसहित सिद्ध भी हुआ है ।

कुदृष्टि उतारनेका महत्त्व समझकर अधिकाधिक लोग कुदृष्टि उतारकर अपने सभी ओर निर्मित कष्टदायक स्पन्दनोंका आवरण दूर कर साधनासे ब्रह्माण्डकी ईश्वरीय तरंगोंका लाभ उठाएं, यही श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है !

– संकलनकर्ता

आध्यात्मिक पीडाओंके निवारण हेतु उपयुक्त सनातनका ग्रन्थ !

कर्पूर, काली उडद, पानका पत्ता आदि से कुदृष्टि कैसे उतारें ?

- शिशुको कुदृष्टि क्यों और कैसे लगती है ?
- कर्पूर, काली उडद, बीडा, चप्पल आदि पदार्थोंसे कुदृष्टि कैसे उतारें ?

अनुक्रमणिका

(कुछ विशेषतापूर्ण सूत्र [मुद्दे] '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।)

१. कुदृष्टि लगनेका अर्थ क्या है ? १५

२. कुदृष्टि लगनेकी सूक्ष्म स्तरीय प्रक्रिया १६

३. कुदृष्टि लगनेके परिणाम अथवा परखने हेतु लक्षण १८

४. 'कुदृष्टि उतारने'का अर्थ क्या है ? १९

५. कुदृष्टि उतारनेके लाभ २०

६. कुदृष्टि उतारनेकी प्रक्रियामें भाव महत्त्वपूर्ण २१

७. कुदृष्टि उतारनेवाले व्यक्तिपर विधिकी फलोत्पत्ति निर्भर करना २२

८. कुदृष्टि उतारनेकी पद्धति (केवल कृत्य) २४

९. कुदृष्टि उतारनेकी पद्धतिका अध्यात्मशास्त्रीय आधार एवं अनुभूतियां २७

* किसीकी कुदृष्टि उतारनेके उपरान्त पीछे मुडकर क्यों नहीं देखना चाहिए ? २८

१०. कुदृष्टि उतारने हेतु उपयुक्त विभिन्न घटक और उनके द्वारा कुदृष्टि उतारनेकी विविध पद्धतियां (नमक, राई, लाल मिर्च, नींबू, नारियल इत्यादि) ३२

* कुदृष्टि उतारनेके लिए नमकके उपयोगका महत्त्व क्या है ? ३३

* कुदृष्टि उतारनेमें उपयुक्त फिटकरीका आकार कैसा हो ? ४९

११. निरन्तर साधना करना ही कुदृष्टिसे बचनेका खरा उपाय ! ७०

卐 कुछ आनुषंगिक सूत्र ७१

卐 संकलनकर्ताओंका वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं अन्य जानकारी ७५